DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3646

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

चित्रकला में रंगों का अर्थ एवं महत्व : प्रतीकात्मक रूप में

प्रतिमा, शोधार्थी
चित्रकला विभाग – दृश्यकला संकाय, इं.क.सं.वि.वि.खैरागढ़

वर्ण संतुलन का अर्थ चित्र में वर्णों का सुव्यवस्थित संयोजन। अर्थात् चित्रकला में रंग एक बड़ा विषय है और चित्र में रंगों की संयोजना बहुत ही महत्वपूर्ण है। भारतीय चित्रकला में रंगों का महत्व प्रागैतिहासिक काल से लेकर आधुनिक काल तक रहा है। चित्रकला में कलाकार के आंतरिक भावों की अभिप्रेरणा चित्रों के माध्यम से प्रदर्शित होती है। कला चित्रकार के मनोभावों में जन्म लेती है। यह मन की अचेतन अज्ञात गहराईयों से ही विकसित होती है। इन भावनाओं को साकार रूप में परिवर्तित करने में चित्र महत्वपूर्ण माध्यम रहा है। रंगों का अपना ही अलग महत्व रहा है इसके साथ ही रंगों की अपनी भावभंगिमा व भाषा होती है, इनका मानवीय भावनाओं से गहरा संबंध होता है। भारतीय सौन्दर्य–दर्शन में चित्रों में वर्णित रंगों का अर्थ अलग–अलग है, जैसे– सफेद रंग शांति और सात्विकता का प्रतीक, लाल शौर्य और वीरता का प्रतीक, काला बुराईयों व मानसिक वृत्तियों इत्यादि। चित्रकला में प्रागैतिहासिक काल से लेकर आधुनिक काल तक रंगों के प्रयोग का माध्यम भिन्न–भिन्न रहा है, जैसे– प्राकृतिक रंग, खनिज रंग, एक्रेलिक रंग, जलरंग आदि। अभी तक इन सभी माध्यमों में चित्रकार द्वारा चित्रों में रंग भरे जाते रहे हैं। इसके उदाहरणों में अजन्ता में फ्रेस्को चित्रण शैली, मुगलकालीन पहाड़ी, राजस्थानी टेम्परा, पुनर्जागरणकाल जलरंग आदि। चित्रों में उपर्युक्त रंगों का प्रयोग कर चित्र में सौन्दर्य, लावण्य व भावों का निरूपण होता है, जिस कलाकार बहुत ही तन्मयता व अंतःप्रेरणा से प्रेरित हो रंगों को विभिन्न चित्रों के माध्यम से प्रदर्शित करता है। रंग चित्र में चित्रकार के भावों को उदीप्त करता है। अवनीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा कला के पुनर्जागरण व चित्र–सृजन के ज्ञान हेतु "इण्डियन सोसायटी ऑफ ओरिएन्टल आर्ट" के प्रकाशन के अंतर्गत 'षडांग' नामक पुस्तिका में 'कामसूत्र' में वर्णित 64 कलाओं में चौथे स्थान पर 'आलेख्य चित्रकला' के सन्दर्भ में चित्रकला के छः अंगों के बारे में विस्तृत विवेचना की है। इन छः अंगों में छठे क्रम में वर्णिकाभंग अर्थात् रंगों के चित्र में महत्व को दर्शाया गया है। इसमें चित्रकार द्वारा चित्रण पूर्ण रंग संयोजन का ज्ञान, उनकी प्रतीकात्मक, अर्थ व नियमों का विस्तृत विवेचन है। इसी प्रकार नाट्यशास्त्र में कहा गया है कि– 'वर्णनाम तु विधिम् गत्वा तथा प्रकृतिमेव च कुर्यादंगस्य रचनाम्', अर्थात् वर्ण की विधि और प्रकृति को समझकर ही आकृति को बनाना चाहिए। इससे कलाकार में कला–कौशल का विकास व दर्शक को चित्रकला में रंगों के महत्व का बोध होता है।

कुछ ऊष्ण एवं सशक्त प्रभाव की सृष्टि करने वाले रंग नेत्रों को अच्छे लगते हैं। रंगों के पारस्परिक संबंध तथा रंगों में विभिन्नता से चित्रों में सौन्दर्य की सृष्टि होती है, क्योंकि इससे नेत्रेन्द्रिय को अपने अनुसार कार्य करने की सुविधा मिलती है। कहा जा सकता है कि चक्षुरिन्द्रिय की अनुकूल उत्तेजना एवं सौन्दर्यानुभव इस दृष्टि से समानार्थी हैं, दृष्टि से नहीं वरन् सम्पूर्ण शरीर पर रंगों का प्रभाव पड़ता है, जिसमें मनुष्य की कार्य–क्षमता में निर्णायक क्षय अथवा वृद्धि होती है।

रंग और विचार का बड़ा ही घनिष्ठ सम्बन्ध है। उनका बहुत प्रभाव हम पर पड़ता है। जैसे हमारे विचार होंगे। हमारी कल्पना में वैसे ही रंग आयेंगे और जैसे ही हम रंग देखेंगे वैसे ही हमारे विचार उत्पन्न होंगे। नाट्यशास्त्र में विभिन्न रसों के रंगों का भी उल्लेख हुआ है। रसों में श्रृंगार रस को श्याम, हास्य को श्वेत, करूण को कपोत, रौद्र को रक्त, वीर को गौर, भयानक को कृष्ण, वीभत्स को नील तााि अद्भुत को पीत वर्ण कहा गया है।

रंगों का प्रतीकात्मक अर्थ – रंग प्रकृति में ही विद्यमान हैं। रंग प्रकृति द्वारा प्रत्यक्ष रूप से हमें प्राप्त होते हैं, वे प्राकृतिक रंग (खनिज रंग) कहलाते हैं। इन रंगों का अपना अलग ही अर्थ प्रतीत होते हैं। प्रकृति में मूल रूप से मुख्य तीन रंग लाल, पीला और नीला है, इनमें से लाल का प्रतीकात्मक अर्थ यदि समझें तो, जैसे हल्का लाल इंगित करता है– कोमलता, सूक्ष्मता। इसी प्रकार गहरा लाल जीवन, साहस; कृष्ण लाल – आग, लगन; ठंडा या उपयुक्त लाल गुलामी या रूमानी; उजला लाल – खतरा; गेहुँआ लाल रंग से पार्थिव आदि का बोध होता है। इस प्रकार और भी बहुत रंग हैं जिनके प्रतीकात्मक अर्थ होते हैं, उनमें से कुछ इस प्रकार हैं–

रूप के भेद को नेत्रों द्वारा समझा जा सकता है। प्रमाण पर बिना तूलिका के ही अधिकार प्राप्त हो सकता है। भाव, लावण्य सादृश्य को देख समझकर जाना जा सकता है, लेकिन वर्णिकाभंग को तूलिका के माध्यम से ही बता पाना संभव है। संबंध में वाचस्पति गैरोला वर्णिका भंग के विषय में कहते हैं कि– 'यह आलेख्य चित्रकला से संबंधित साधन का चरम बिन्दु है, अर्थात् अंतिम परिणति है। एक ऐसी परिणति जो तूलिका संभालने के बिना संभव नहीं है।'

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

चित्रकला में रंगों का प्रयोग आकृति में इस प्रतीकात्मक अथर्र को समझकर ही भरना चाहिए। इन रंगों के प्रतीकात्मक अर्थ का ज्ञान चित्रकार को ही नहीं बल्कि उन समस्त विद्यार्थियों को होना चाहिए, जो चित्रकला से सम्बन्धित है या इसकी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। इस ज्ञान से चित्र में कहाँ, कैसा व किस प्रकार के रंगों के मिश्रण से दृश्यांकन करना है। स्वतः ही धीरे–धीरे ज्ञात होता जाता है। उदाहरण स्वरूप भारतीय चित्रकला में भित्तिचित्रों, उत्कृष्ट रेखाओं (लय)।

सामान्य रंगों का अन्तसम्बन्ध – इन रंगों का मस्तिष्क में क्या भाव, विचार व तस्वीर प्रत्यक्ष होते हैं, उनका मनोवैज्ञानिक प्रभाव का उल्लेख इस प्रकार है–

लाल– क्रोध, रक्त, आग, खतरा, साहस, वीरता, उत्साह व भावुकता।
पीला – सावधानी, गर्म, उजला, प्रकाश, चमकीला, दीप्तिमान, आनंद।
नीला – पानी, आकाश, दिव्यता, ठंडा, दूरी, पुंजातीय, आरामदायक, गहरी उदासी।
नारंगी – गर्मी, ऊर्जा, तनाव फुर्तीला, शरद ऋतु।
हरा – विकास, आशा, प्रकृति, ताजगी, उपजाऊपन, सौम्यता।
बैंगनी – छाया, धार्मिक, कल्पनात्मक, जादुई, शाही, सम्मानित।
काला – अंधेरा, रात, मृत्यु, शोक, दुःख, गन्दा, बुराई, नाटकीय, दुष्टग।
सफेद – सर्दी, शांतिपूर्ण, शानदार, शुद्ध, निर्दोष, साफ, कमजोर।
भूरा – पार्थिव, प्राकृतिक, विश्वासयोग्य, रूढ़िवादीर, मौलिकता।

गति, सौन्दर्य से परिपूर्ण अद्‌भुत ऐसा रंग संयोजन का अनुपम महान उदाहरण अजन्ता की गुफाओं में परिलक्षित होता है। अजन्ता के भित्तिचित्रों में प्लास्टर या टेम्परा पद्धति से चित्रण हुआ है। यहाँ समय के प्रभाव में इस महान चित्रकारी का का बहुत कुछ वर्ण सौष्ठव तााि लावण्य क्षीण होने के फलस्वरूप इन चित्रों की आभा में फीकी नहीं पड़ी ै। यहाँ के चित्रों में प्राकृतिक खनिज रंगों का ही प्रयोग किया गया है, जो आज भी उसी तरोताज़ा प्रतीत होते हैं। अपने उपयुक्त रेखांकन, रंग संयोजना व चित्रित विषय की दृष्टि से ये आज विश्व में कला व सौन्दर्य की अनुपम धरोहर परिनिष्ठित है। इस प्रकार यदि देखा जाये तो भारत में किसी भी काल में फिर यदि वह मुगलकाल हो या राजपूत काल और पहाड़ी शैली, इन सभी कालों में चित्रों में रंगों का उपयुक्त रंगांकन से परिपूर्ण है।

इन सभी कालों में रंगों के महत्व, चित्र में उनकी गहराई को ध्यान में रखकर चित्रों का सृजन कलाकार द्वारा प्रस्तुत किया गया है। भारतीय चित्रकला में रंग भारतीय सौन्दर्य, लावण्यता दर्शकों को चित्रों के माध्यम में अभिभूत कराते हैं। उसमें रंग चित्रकला में ही नहीं बल्कि हमारे समाज में भी महत्वपूर्ण है। ये सभी रंग मनुष्य जीवन के विविध पक्षों से सम्बन्धित होते हैं। जन्म से लेकर मृत्यु तक जीवन के विविध पक्षों में रंग प्रतीकात्मक रूप से जुड़े हुए हैं, जिनका मानव जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। उपर्युक्त सभी तथ्यों को ध्यान में रखकर निश्चित रूप से यह कहा जा सकता इस प्रकार रंगों का हमारे जीवन में विशेष महत्व है।

रंग भारतीय चित्रकला का एक आवश्यक तत्व है, जिसके अभाव में चित्र लगभग अपूर्ण ही रहता है। सिर्फ रेखांकन मात्र से चित्रों में सौन्दर्य के भाव को व्यवस्थापित नहीं किया जा सकता। इसीलिए रंगों के प्रतीकात्मक रूप को समझते हुए कलाकार द्वारा चित्रों का चित्रांकन से चित्रों के अर्थ तथा उसके उद्देश्य की उपयोगिता का बोध होता है। इस प्रकार भारतीय आचार्यों ने चित्रकला की समस्त व्यवहारिक आवश्यकताओं का निर्देश ही नहीं अपितु उसे एक दार्शनिक आधार भी प्रदान किया है।